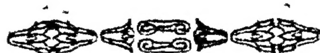
प्रकाशकः—
श्रीहिन्दीजैनागमप्रकाशक सुमतिकार्यालय
जैन प्रेस
कोटा (राजपूताना)

प्रथमा वृत्तिः ५००

मुद्रकः—
जैन प्रेस,
कोटा.

भूमिका



संगीत के प्रति मानव का आकर्षण नैसर्गिकसा है। यही एक ऐसी कला है जिससे शिक्षित अशिक्षित यावत् पशु पक्षी तक आकर्षित हो जाते हैं। मनोरंजन के लिये तो इसका उपयोग है ही, पर विशिष्ट व्यक्तियों ने इसका सदुपयोग भक्ति में करके इसको लौकिक के स्थान पर अलौकिक, जैन परिभाषानुसार आश्रव को निराश्रव में परिवर्तित कर दिया। कलाप्रेमियों ने इसका समुचित विकाश किया, अन्ततः इसे शास्त्रीय व्यवस्थित रूप मिला, जिसके फल स्वरूप भारतीय साहित्य में बड़े २ ग्रन्थ संगीत के संबंध में रचे गये एवं अनेक नवीन वाद्ययंत्रों का आविर्भाव हुआ।

जैन विद्वानों का ध्यान प्रारंभ से ही लोक रुचिकी ओर रहा है; उन्होंने समय समय पर ऐसी अनेक प्रवृत्तियों को अपनाया, लोकवार्त्ताओं को जैन संस्कृति का बाना पहनाया, लोक भाषा में साहित्य निर्माण किया, लोक गीतों के अनुसरण में हजारों काव्य गीत निर्माण किये। संगीत के प्रति मानव के स्वाभाविक आकर्षण का अनुभव कर राग रागिनियों में भक्ति-गीत एवं वैराग्यमय आध्यत्मिक पदों की रचना की। जनता के हृदयहार प्रसिद्ध लोक गीतों की विशालता एवं प्रसिद्धि का पता ही हमें जैन रास एवं स्तवनादि साहित्य से लगता है। गुजरात एवं राजस्थान के सैकड़ों लोकगीत जो अब विस्मृति के गर्भ में विलीन हो चुके हैं उनका आद्यपद एवं कोई २ का पूरा लोकगीत जैन रासों में ही सुरक्षित है। जैन विद्वानों के उनके संरक्षण के उपकार को साहित्य संसार कभी भुला नहीं सकता।

लोक भाषा में तो विविध राग रागिनियों एवं देशियों का उपयोग किया ही गया है, पर कतिपय जैन विद्वानों ने संस्कृत भाषा की भी राग रागिणी मय कृतियों का निर्माण किया है। साधारणतया संस्कृत पद्यों का निर्माण छंद शास्त्रोक्त छंदो में ही किया जाता था। अपभ्रंश और हिन्दी के कवियों

ने भी उसी का अनुकरण किया, पर १२वीं शतीमें कवि जयदेव ने संस्कृत भाषा में संगीतमय पदावली रचकर नवीन आदर्श उपस्थित किया। उनके गीत-गोविन्द ग्रन्थ से ही प्रेरणा पाकर दि० विद्वान् चारुकीर्ति ने द्रविड देश के सिंहपुर में गांगेयवंश के राजपुत्र देवराज के अनुरोध से 'गीतवीतराग' नामक सुन्दर काव्य निर्माण किया। जिसकी प्रति जैन सिद्धान्त भवन आरा, में सुरक्षित है। चारुकीर्ति का समय १५ वीं का शेषार्द्ध माना जाता है। गीतगोविन्द काव्य, कृष्ण राधिका के प्रेम को निरूपण करने वाला शृंगार प्रधान भक्ति काव्य है, तब गीतवीतराग में ऋषभदेव भगवान का वैराग्यमयचरित्र वर्णित है। इन दोनों के अनंतर १८ वीं शती के सुप्रसिद्ध विद्वान् विनयविजय-जी ने आध्यात्मिक भावनाओं से परिपूर्ण शान्त रस का सागर 'शान्त सुधा-रस' नामक काव्य इसी शैली का निर्माण किया। इस का निर्माण सं० १७२३ गंधार में हुआ था, एवं दो गुजराती विवेचनों के साथ यह प्रकाशित भी हो चुका है। अद्यावधि इस शैली की इन दो ही जैन रचनाओं का पता था, मुनि विनयसागरजी ने ऐसी एक और कृतिका अन्वेषण एवं प्रकाशन कर संख्या में अभिवृद्धि की है।

प्रस्तुत चतुर्विंशतिका में राग के साथ देशिओं के नाम देकर राग के नामों से अनभिज्ञ जनता को भी गाने की सुगमता करदी है। इसमें २५ स्तवन है, जिनमें से २३वें को छोड़ सभी में जैन व जैनेतर देशियों के नाम है। नं० १-१७-२३में तो दो २ देशियों के नाम दिये हैं, इनमें से स्तवन नं० १ की नं०२ वाली देशी एवं अंतिम २५वीं देशी जिनराजसूरिजी के चौवीसी के अजि-तनाथ स्तवन एवं अन्तिम स्तवन की हैं और परवर्ती अन्य कवियों ने भी अपने रासों में इनका उपयोग किया है। नं० १ के प्रथम देशी वाला स्तवन भी जिनराजसूरिजी का ही है। स्तवन नं० २-४-८ वाली देशियें भी काफी प्रसिद्ध ही प्रतीत होती है जिनका उपयोग अन्य रासकारों ने भी किया है। नं० ६ जिनचन्द्र के सीमंधर स्तवन की एवं नं० ३-१९ की देशी साधुकीर्त्ति रचित १७ भेदी पूजा की है। अब स्तुतिकार का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है-

स्तुतिकार पुण्यशील

प्रस्तुत 'चतुर्विंशति-जिनेन्द्रस्तवनानि' के रचयिता वाचनाचार्य पुण्यशील जैसाकि अंत्यप्रशस्ति में कवि ने स्वयं बतलाया है, खरतरगच्छीय क्षेमकीर्ति शाखा के वा० शान्तिहर्ष शिष्य वा० जिनहर्ष शि० वा० सुखवर्द्धन शि० वा० दयासिंह शि० महोपाध्याय रामविजय (रूपचन्द्र) के आद्य शिष्य थे। अन्य साधनों से ज्ञात होता है कि आपकी वंश परंपरा एक विद्वत्परंपरा है। नीचे इनके वंश क्रमकी पूरी तालिका दी जारही है

नम्बर	नाम
१	श्रीजिनकुशलसूरि
२	महो० विनयप्रभ
३	उपा० विजयतिलक
४	क्षेमकीर्त्ति
५	तपोरत्न
६	वा० भुवनसोम
७	उपा० साधुरंग
८	वा० धर्मसुन्दर
९	वा० दानविनय
१०	वा० गुणवर्द्धन
११	वा० श्रीसोम
१२	वा० शान्तिहर्ष
१३	कविवर जिनहर्ष
१४	वा० सुखवर्द्धन (सभाचंद)
१५	वा० दयासिंह
१६	महो० रामविजय (रूपचंद)
१७	वा० पुण्यशील
१८	वा० समयसुन्दर
१९	वा० शिवचन्द्र (शंभूजी)
२०	रामचंद्र
२१	उदयराज
२२	नेमिचन्द्र
२३	श्यामलाल
२४	विजयचन्द (जिनविजयेन्द्रसूरि)

इनमें से नं० ५ तक के विद्वानों की साहित्य सेवादि का परिचय हमने अपने 'दादा श्रीजिनकुशलसूरि' पुस्तक में दे दिया था। नं० ६-७-८ की कोई उल्लेखयोग्य कृति उपलब्ध नहीं है। नं० ९ दानविनय के रचित १-नंदिषेण चौपाई (सं. १६६५ नागोर पत्र ८६) और २ उवसग्गहर बालावबोध (स. १६७३ लि.) प्राप्त है। नं १०-११-१२ के रचित भी कोई उल्लेख योग्य रचना प्राप्त नहीं है। नं० १३ कविवर जिनहर्ष १८वीं शताब्दि के सुप्रसिद्ध रासकार थे। इनका संक्षिप्त परिचय 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' में आपके गीत एवं हस्तलिपि के ब्लाक के साथ प्रकाशित किया था। और विस्तार से "राजस्थान क्षितिज" के सितम्बर अक्टूबर १९४५ के अंक में 'सुकवि जसराज' के नाम से प्रकाशित किया था। इसमें आपकी रचनाओं की विस्तृत सूची, गुरुभ्राताओं एवं नं० १६ तक की शिष्यपरंपरा का उल्लेख किया गया है। उपर्युक्त अंक में स्थानाभाव से विद्वद्वर महो० रामविजय की रचनाओं की सूची नहीं दी जासकी थी, अतः यहां दी जारही है—

१– भर्तृहरि शतकत्रय बालावबोध सं. १७८८ कार्तिक वदी १३ सोजत छाजेड़ मनरूप आग्रह से रचित
२–अमरुशतक ,, सं. १७९१ आश्विन सुदी १५ सोजत ,,
३–समयसार ,, सं. १७९८ आश्विन सोनगिरि, जगन्नाथ हेतवे
४–लघुस्तव ,, सं. १७९८ माघवदि २ सोम
५–मुहूर्त्त मणिमाला (राजस्थानी में ज्योतिष) सं. १८०१ मि. शु. १
६–गौतमीय महाकाव्य सं. १८०७ जोधपुर (सटीक प्रकाशित)
७ भक्तामर टब्बा सं० १८११ ज्येष्ठ सुदी ११ कालाऊना
८– कल्पसूत्र बालावबोध सं. १८११ (?)
९– गुणमाला प्रकरण सं. १८१४ (प्रकाशित)
१०–चित्रसेन पद्मावती चोपाई सं० १८१४ पो. सु. १० बीकानेर
११–चतुर्विंशति जिन स्तुति पंचाशिका (सं.) सं. १८१४ भा. व. ३ बीकानेर
१२–साधु समाचारी सं. १८१६ शि० विद्याशील पठ०
(संभवतः यह नं० ८ के अंतर्गत ही हो)

१३-आबू यात्रा स्तवन सं. १८२१ (जिनलाभसूरि ८५ यतियों सह यात्रा का उ०)
१४- हेम व्याकरण भाषा टीका सं. १८३२ पो. सु. ३ कालाऊना, मुणोत सूरतराम के लिये रचित
१५-फलोदी पार्श्वस्तवन सं. १८३३ मि. व. ८
१६-अल्पाबहुत्व स्तवन सं. १८२३ चै. व. १२
१७-नवतत्व टब्बा सं. १८३४ अजीमगंज, सबलसिंह पठनार्थ
१८-वीरायु ७२ वर्ष स्पष्टीकरण सं० १८३७ आश्विन सुदी ६ मेड़ता
१९-सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति सुबोधिनी पूर्वार्द्ध ग्रं० ३४६५
२०-कल्याणमंदिर टब्बा
२१ विवाह पडल भाषा
२२-सन्निपात कलिका टब्बा
२३-साध्वाचार षट्त्रिंशिका (सं.)
२४-पार्श्व स्तवन सटीक
२५-नेमि नवरसा
२६-सहस्रकूट स्तवन
२७-नयनिक्षेपा स्तवन
२८-विज्ञप्ति द्वात्रिंशिका
२९--स्तवनादि

प्रस्तुत कृति के रचयिता वा० पुण्यशील उपर्युक्त रामविजयजी के प्रथम शिष्य थे। आपकी अन्य कोई रचना अभीतक ज्ञात नहीं है और न आप का परिचय ही प्राप्त है। दीक्षा नंदी सूचि के अनुसार आपकी दीक्षा सं० १८०६ के माघ वदी ७ या इसके आसपास ही जिनलाभसूरिजी के पास हुई थी। दीक्षा समय पर विचार करते हुये आपका जन्म सं. १७९० के लगभग संभव है। प्रस्तुत 'चतुर्विंशति स्तवः' की रचना सं. १८५९ के भा० सु० ५ (संवत्सरी पर्व) गुरुवार को पाली में सेठ भगवानदास के आग्रह से हुई थी। अतः प्रस्तुत कृति आपके शेषजीवन की रचना ज्ञात होती है। इसी एक कृति से आपके राग रागिनी एवं देशियों के सम्यग् ज्ञान और संस्कृत भाषा पर अच्छा अधिकार का पता चलता है।

आपके शिष्य समयसुन्दर गणि हुए (जिनकी दीक्षा सं. १८१३ माघ वदी ८ गुरु को बीकानेर में जिनलाभसूरिजी के हाथों से हुई थी) इनके शिष्य शिवचन्द्र उपाध्याय भी अपने समय के श्रेष्ठ विद्वानों में से थे। उन्होंने तत्कालीन आचार्य जिनहर्षसूरिजी के साथ कई वर्ष रहकर उन्हें पढ़ाया था। आप सं०

१८३६ में जिनचन्द्रसूरिजी के समीप दीक्षित हुए थे। 'प्रद्युम्न लीला प्रकाश' नामक बृहद् कथाग्रन्थ आपकी विद्वत्ता का भली भांति परिचय देता हैं। आपकी ज्ञात रचनाओं की सूचि नीचे दी जारही है—

१-वीसस्थानक पूजा सं. १८७१ भा. व. १० अजीमगंज (जिनहर्षसूरि के नाम से)

२-इक्कीस प्रकारी पूजा सं१८७८ माघ सुदी ५ रवि

३-ऋषिमंडल २४ जिन पूजा सं. १८७६ द्वि. आश्विनसुदी ५ जयपुर

४-प्रद्युम्नलीलाप्रकाश * (गद्यसे.) सं. १८७६ का. सु. १३ जयपुर, शि० रामचंद्र, रतनचंद्र पठनार्थ

५-अध्यात्म चत्वारिंशिका (पार्श्वस्तोत्र शिखरिणी छंदमय)

६-सिद्ध छिहोत्तरी.सं० १८८६ मा. व. १३ जैसलमेर पार्श्वप्रभु प्रसादात्

७- पुष्पांजली स्तोत्र ८-स्तवनादि—

उ. शिवचन्द्रजी के शिष्य रामचंद्रजी भी अच्छे विद्वान थे, इनकी निम्नोक्त रचनाओं का पता चलता है—

१-कर्मबन्ध विचार (पन्नवणा सूत्रानुसार) सं. १९०७ का. सु. ५ ग्वालियर सिंधियाकटक

२-पंच चारित्र के ३६ द्वार भाषा (भगवती से) सं. १९०० का. २ (पत्र २८)

३-तेरहकाठिया सज्झाय सं. १९१० भा. सु.१० सिंधियाकटक, संचेती वृद्धिचंद के लिये रचित

४-फलोदी पार्श्वस्तवन सं. १९१५ माघ वदी १३

५- आबू स्तवन सं. १९१५ फागुन वदी १०

६-गिरनार स्तवन सं. १९१५ चै. व. ११ बुधवार संचेती वृद्धिचंद्र हजारीमल नाहटा के संघ सहयात्रा

७-शत्रुञ्जय स्तवन सं० १९१६ चै. सु. ९

८-तारंगा स्तवन सं. १९१६ जे. व. १ भौम

---

*इसकी त्रुटित प्रति प्राप्त हुई है, किसी महाशय को पूर्ण प्रति प्राप्त हो तो हमें सूचित करें।

९–धुलेवास्तवन सं० १८१६ ज्ये. वं. १५
१०–अभयदेवसूरि स्तवन (प्र०)

रामचन्द्रजी के शिष्य उम्मेदचन्दजी रचित १—प्रश्नोत्तर शतक १८८४ जयपुर) २–दिवाली का व्याख्यान (सं. १८६६ ज्ये. सु० १३ अजीमगंज) उपलब्ध है। द्वितीय ग्रन्थ परमपूज्य श्रीजिनमणिसागरसूरिजी म० ने 'संस्कृत पर्वकथा संग्रह' में प्रकाशित करवा दिया है। द्वितीय शिष्य आनंदवल्लभ के रचित नीचे लिखे ग्रंथों का पता चलता है—

१–दंडक संग्रहणी बालावबोध सं० १८८० मा. अजीमगंज
२–विशेषशतक (कविवर समयसुंदर जी र०) भाषा सं. १८८१ ज्ये. सु. ५ बालूचर, ईश्वरचंद दूगड़ के आग्रह से
३–श्राद्धदिनकृत्यभाषा सं. १८८२ श्रा० सु. १२ अजीमगंज, बोथरा रत्नचंद के आग्रह से
४–होलिका व्याख्यान भाषा सं० १८७३

रामचंद्रजी के तृतीय शिष्य उदयराज के शिष्य नेमिचंद्र के शिष्य श्यामलालजी जयपुर में रहा करते थे। कुछ वर्ष पूर्व ही इनका स्वर्गवास हुआ है। इनके शिष्य विजयचंद्र अभी जिनविजयेन्द्रसूरि नाम से बीकानेर भट्टारक शाखा के श्रीपूज्य हैं।

परमपूज्य आचार्यवर्य्य श्रीजिनमणिसागरसूरिजी म० व उनके शिष्य मुनि श्री विनयसागरजी ने प्रस्तुत पुस्तिका की भूमिका लिखने का जो मुझे अवसर दिया है एतदर्थ मैं पूज्यवर्य्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करता हुआ आशा करता हूं कि भविष्य में भी इसी प्रकार साहित्योद्धार व प्रकाशन द्वारा जैन शासन की सेवा में प्रयत्नशील रहेंगे।

ज्येष्ठ सुदि १५ सं २००४

अगरचंद नाहटा
बीकानेर

शुद्धाशुद्धिपत्रम्

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठ	पंक्ति
समरु देवोदरा करज हीरम्	सुमरुदेवोदराकरजहीरम्	१	१६
समित	शमित	२	१५
मदोद्भटकटक	मदोद्भट, मोह कटक	३	८
हिम	महिम	५	४
दुरिभ	दुरित	७	१३
जगत्रय	जगत्त्रय	१०	५
परिगं	परिवं	१०	२०
दुरधर्म	दुर्धर्म	११	६
लांछनित	लांछित	१२	३
निशयम तसुभव्या:	निशमयत सुभव्याः (सब जगह सुधारलें)	१२	१७
ध्वम सुभ मुद्रांरे	ध्वमशुभमुद्रांरे	१३	२२
धुनीत	धुनीन	१६	१६
क्षिति	चुति	१६	१५-२०
मयिरमस्वो	मयि रमस्वो	२०	१२
गजोत्तम	गजो—तम	२०	२१
ना–शनं	नाशनं	२२	१८

कलश—सममें शार्दूल विक्रीड़ित छन्दः, विषम में हरिगीत छन्द है ।

॥ ॐ ॥

श्रीखरतरगच्छीय कोविदोत्तम वाचनाचार्य
श्री पुण्यशील गणि गुम्फितः—

श्रीमच्चतुर्विंशति जिनाधिराज स्तवः।



(मंगलाचरणम्)

श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रं, चरणकज प्रणत भक्ति विबुधेन्द्रम् ।
अभिनम्य रम्य मनसात्मातिमलिनता विशुद्धयर्थम् ॥१॥
श्रीमज्जिनेश्वराणां, सदा चतुर्विंशतेः सुखकराणाम् ।
भव्यजनानन्दकरी, विधीयते स्तुतिरियं मयका ॥२॥ युग्मम्

१—श्री युगादि जिनेन्द्र स्तवः।

(भावधरी धन्यदिन आजलफलो मिणुं अनयारीन्या भिआस रागेण गीयते : यद्वा तार करतार संसारसागर थकी अनयागत्या च कडखा रागेण गीयते)

ऋषभयोगीश्वरं भजतजगदीश्वरं,
जंतुगण शंकरं गतविकारम् ।
सकल भवभयहरं वृषभलांछनधरं,
प्रथमतीर्थंकरं विजयकारम् ॥ ऋष० १ ॥

विमलगिरि पूर्व-गिरिराज वासरकरं,
समरु देवोदरा करज हीरम् ।
जगति गलि विततर कुमतिमत घनघना,

घनघटा विघटनोत्कट समीरम् ॥ ऋषभ० ॥२॥
मदन मद कंद निःकंदना मंदतर,
धार तरवारि—समर गिरिधीरम् ।
कुशल हरि चन्दन प्रकर नन्दनवनं,
कुनयघन रेणु संहरण नीरम् ॥ ऋषभ० ॥३॥
प्रणत विबुधेन्द्र-दनुजेन्द्र मनुजेन्द्र गण,
विहित वंदनमिनं जैनचन्द्रम् ।
त्रिजगदानन्दनं नाभिनृपनन्दनं,
पाप संताप चंदनमनिन्द्रम् ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥
विगत सकलापदं संपदां कारणं,
कठिन ममता मही भेदसीरम् ।
अखिल मकराकर प्रकर वर रुचिरतर,
गरिम धर चरम सागर गभीरम् ॥ ऋषभ० ॥५॥
भक्त गोवदन चक्रेश्वरी विहित पद,
कज युगोपासनं समित शान्तिम् ।
सुविमलेक्ष्वाकु वर वंश भूषणमणिं,
तप्त तपनीय कमनीय कान्तिम् ॥ ऋषभ० ॥६॥
निहत कुमतौघकाकारि मद वदन रवि,
मोदित क्रम विनत भव्यकोकम् ।
विशद भगणेन्द्र शिवचन्द्र परचन्द्रिका—
मलयशः संधवलित त्रिलोकम् ॥ ऋषभ० ॥७॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मंदानंदघन द्रुमौघ जलदोऽयं श्रीयुगादीश्वरः ।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्याप्रमुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनां ॥१॥

२—श्री अजित जिनेन्द्र स्तवः ।

(अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं अनयारीत्या काफीरागेण गीयते)

अजितजिनेश्वर विजित मदोद्धट कटक हत कुमते ।
भवभय दारुण कारण वारण दारण हरिणाधिपते ॥
विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ १ ॥
घन कर्माचल ज्वलन ज्वाला माला कुलशतकोटे ।
अशरण शरण चरण संप्रणता-गणित सुरासुर कोटे ॥
विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ २ ॥
व्यसन तरंगा कुलगति जल, भवजल निधि तारण तरणे ।
वितत दुरित सुदुरंत तिमिरभर, हरण तरुण तर तरणे ॥
विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ ३ ॥
अनलधौत कलधौत तनुप्रभ, भवजलधौ विनिमग्नम् ।
करुणां कृत्वा करुणाकर मां, तारय पातक लग्नम् ॥
विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ ४ ॥
केवल कमला निलय दलयता-द्गुरु चिर संचित दुरितं ।
त्रिजगदधीश्वरता पद्माश्रिप-तां मम चाशु कलयतात् ॥

विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ ५ ॥
विजित शत्रु जितशत्रु नृपान्वय, मौलिमणे शिवभृत हे।
यक्ष दक्ष महायक्षान्वितया-जितबल याभिष्टुत हे॥
विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ ६ ॥
शर-दुद्भव शिवचन्द्र किरणगण, विमल सुगुणमणि जलधे।
द्विरदांकित पदपद्म निरुपमा-नंत शक्ति सुधननिधे।
विजयांगज महाराज जय जय भुवनाधिपते ॥ ७ ॥

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमलकेवललोचन,
आनंदघन पद कंद जलदोयमहितवन विरोचनः
श्री अजित इत्थं मुदा वाचक पुण्यशीलगणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥ ८ ॥

३-श्री सम्भव जिनेन्द्र स्तवः।

(कुन्द किरण शशि ऊजलोरे देवा अनयारीत्या सोरठ रागेण गीयते)

क्रियते सुतरां मित्रता रे जीवा, मुक्ति कमलयासाकं रे।
केवलमाल्याद्धारतो रे जीवा-स्तर्हि वरं चासाकं रे ॥ १ ॥
यदि भवतां हृदि वर्त्तते रे जीवा, अभिरामोऽयं विमर्शो रे।
परमाध्यात्म निबन्धनं रे जीवा, विनिहत कुमति स्पर्शो रे।२।
विहित जितारि सेना मुदो रे जीवाः, कनक समानांग रुचो रे।
तुरगांकित पद जलरुहो रे जीवाः, कुशल फलद वारिमुचो रे।२

यश विभ्रमे तस्याः पुरा रे जीवा-स्तर्हि सदा तत्स्मरणं रे।
अस्य संभव तीर्थंपतेस्तु रे जीवा, उररी कुरुत सुखकरणं रे ॥४॥
सुवशीकरणे त्रिजगतां रे जीवा, निरुपम मंत्र समानं रे।
अकुशल जलरुह महिम समं रे जीवा, अगणित हिम निधानं रे।५।
परमौषध साधारणे रे जीवा, कर्म्म रुजां संहरणे रे।
अस्य जिनाधिपतेः सदा रे जीवा, वशतु ममात्मा शरणे रे ॥६॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
सन्दानन्दघन द्रुमौघ जलदोऽयं संभवेशो जिनः।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्या मुदाभिष्टुतो,
भूयाद् भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ॥७॥

४—श्री अभिनन्दन जिनेन्द्र स्तवः।

(व्रजमण्डल देश दिखाउ रसिया अनयारीत्या अलीय
वेलाउल रागेण गीयते)

श्रीअभिनन्दन जगदभिनन्दन, संवर नृप नन्दन वर हे।
भव्याम्भोज विबोधन किरण, विसर भासुर वासर कर हे॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ १ ॥
वितत कुमत कुयश-स्तारागण, परिभव पूर्ण निशाकर हे।
सकल सुरासुर नरवर मधुकर, सेवित पदरुज गतदर हे॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ २ ॥
मधुरिम रंजित सकल भुवनजन, विसरगयाश्वानीश्वर हे।

हृदयामृत-जलनिधि जनितायां, मदतरुभंजन सिंधुर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ३ ॥
प्रवचन रुचिर सुधायाः पानं, श्रवण पुटाभ्यां गुणधर हे ॥
विदधु र्विदधति सुविधास्यंति च, ये भव्यास्तव जिनवर हे।
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ४ ॥
अखिल निजात्मा ऽन्वयत्र परिणतं, हत्वा कर्म रसंस्वर हे ।
अजरामरतां ते प्रययु-र्याति, च यास्यंति महेश्वर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ५ ॥
मम निशमय विज्ञप्तिं त्वरितं, दुःखित दीन दया पर हे ।
भवसंभ्रमण भयातुर मनसः, कनक समान कान्तिभर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ६ ॥
वनिता तनुवन परिवृत कुचगिरि, विहित भ्रमतिना चामर हे।
धृततरुणी भ्रूचापोपरितन, नयन शरेण नृ शेखर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ७ ॥
जनिता गणितातंक मकर-ध्वज भिल्लेन हत स्मर हे ।
जनन जरामरणोद्भट हरि करि-किरिभय दुर्गां भयहर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ८ ॥
अनिशमटाटांचक्रे भव विक-टाटविकासुत्कटकर हे ।
विगत नयन जन वन्चा ज्ञानां-धतया प्लवग लक्ष्मधर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ९ ॥
परमात्ममिरधिपतिभिरनंतै-रानंदितमभयदवर हे ।

अपुर्नभव नगरं प्रजिगमिषो, रधुना जिन वैद्येश्वर हे १० ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ १० ॥
सिद्धार्था शुभ कुक्षितैः शुक्ति, मुक्ताफल मुनिजन सुंदर हे ।
गगन प्रदेशान्तर समयान्तर, स्व स्पर्शायन ममलतर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ ११ ॥
मिथ्यात्वादि कुपथविधाना, दनिशमुत्तमाप्रेसर हे ।
वर्द्धित घन घन घाति कर्मगण, तिमिर रुजावरणेतर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ १२ ॥
लोकालोक विलोकन केवल, चिद्दर्शन नयनेपर हे ।
मम करुणौषधि परम रसांजन, विधिनोद् घाटय काकर हे ॥
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ १३ ॥ सप्तभिःसम्बन्धः
विशद वदन शिवचन्द्रानंदित, भक्त चकोर विपत्सर हे ।
प्रशमित दुरिभ ताप विजितामृत, मधुरिम शमरस सागर हे
जय जय विश्व जनेश्वर हे ॥ १४ ॥

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमल केवल लोचन,
आनन्दघन पद कंदजलदोयमहित वनविरोचनः ।
संवरज इत्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥१५॥

५—श्री सुमति जिनेन्द्र स्तवः ।

(गीत पद्धति सारंगरागस्वरानुसारि सुणि चतुर सुजाण पर-
नारी सु प्रीतड़ीकबहु न कीजियै अनया गरबा—

छय यान रीत्या गीयते ।

मम सुमंगला तनयो यतिपतिरस्तु सुमंगल कर सदा ॥
कल केवल कमलाया भर्त्ता, सकलामंगल माला हर्त्ता ।
व्यसनोदधि पतित जनोद्धर्त्ता ॥ मम सुमंगला० ॥ १ ॥
अविनश्वर सत्य चिदानन्दी, पञ्चानन्दन मद निःकन्दी ।
सद्गुण गण निखिल भुवन वन्दी ॥ मम सुमंगला० ॥२॥
शरणागत समजनता तायी, पुनरनुपम वांछित सुखदायी ।
ह्यनिशं प्रशमामृत रस पायी ॥ मम सुमंगला० ॥ ३ ॥
मुनि मानस मानस वरहंसः, क्षोणीपति मेघ कुलोत्तंसः ।
कृत दर्शनरत दुरित ध्वंसः ॥ मम सुमंगला० ॥४॥
शुभ मुक्ति दरि सारंगारि-हित विजित विश्वसमकर्मारिः ।
अपरागम रेणुहरण वारि ॥ मम सुमंगला० ॥ ५ ॥
क्रौंचांकित चरणः श्री सुमतिः, प्रणतामर पतिततिविहितनुतिः
करुणाधिकृतिश्च जिनाधिपतिः । मम सुमंगला० ॥ ६ ॥
वरचन्द्र विशद सुयशोधारी, जितकनक कांति तनु रुचि भारी
धृत चरण करण जन हितकारी ॥ मम सुमंगला० ॥ ७ ॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मन्दानंदवन द्रुमौघ जलदोऽयंश्री सुमत्याह्वयः ।
इत्थं वाचक पुण्यशीलगणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ८॥

६—श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र स्तवः ।

(गीतपद्धति-सुगुण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वामि-अनया-
गत्या भैरवराग स्वरानुसार तयागीयते)

स्थाणुर्यस्य घनोदधि मुखवलयानि च सर्व्वे,
लोकाकारस्तदुपरि यष्टिर्यस्यविगर्व्वे ।
गिव्यीधारेषत्प्राग्भारातैलाधार
पात्रं तदुपरि यस्य सकल जनता हितकार ॥१॥
तीव्र शुभाध्यवसाय सुयंत्र निपीडितदुष्ट,
घन मिथ्यात्वि तिल व्रज निःसृत विमलविशिष्ट
चिद्-साधारण कारण परम क्षायिक भाव,
सतताक्षय वर तैलभृतः कृत भावा-भाव ॥२॥
वरतरया परमात्मदशादशया-व्ययभाव,
मनिश मुपागतया सहितो दुरित द्रुम दाव ।
लोकित लोकालोक सकल वसु गुणपर्य्याय,
केवल दीपक कलिका कलितो गुणपर्याय ॥३॥
विजितानंतानंत तिमिर हर किरणाधार,
वासरमणिगण तरुण प्रकाशो विगताकार ।
उद्धत चार्वाकादि कुदर्शन कुमति पतंग,
विताति भस्मी भवनं प्रययौ यत्र चिदंग ॥४॥
स्मरणासक्त सुमनसां भव्यानां तव कर्म,
निकर तिमिर भरहरणं विधाय निहित निजधर्म्म

प्रकटित निज सम तेजश्चिन्मय गृहमणि चक्र,
आत्म विमल निलयेषु पद प्रणताखिल शक्र ॥५॥
परमयोगिनामपिमानस वचनांगा गम्य,
रूपो दीपस्त्वमसि सचैष जिनेश्वर रम्य ।
कोऽपि जगत्रय जनता विस्मय कर्त्ता साद्य,
पर्य्यवसानतया समवस्थित ईडनवद्य ॥६। षड्भिः संबंधः
किंच जनश्रुतिरेषा विदिता जगति जगत्र,
शास्त्रेप्येवमियं च विलिखिता गुणतरु सत्र ।
सूर्या-चन्द्रमसावा-नंदयतोह्यरविन्द,
विपिन चकोर गणौ नहि चित्र मुनिजनचन्द ।७।
एनौ तव मुखकमलं नयन चकोरौ चात्र,
पूर्वं प्रवरानंदं गमयांचक्रुरकात्र ।
प्रत्युत रुचिर सुसीमोदर मानस नृपहंस,
धरधरिणी धर सिततर बंधुरवंश वतंस ॥८ ॥
पद्मांकित पदपंकज परमानंद सुसद्म
पद्मप्रभ विजितोदयदरुण प्रभ च विपद्म ।
तद्युक्तं हि विनिर्जित सकल कमल लावण्य,
मभवत्त-त्तव वदन कमलजं कृतकारुण्य ॥६॥
चन्द्र सुधवलेक्ष्वाकु सुकुल जलनिधि संजात,
सुतनुलता नालोपरिशंकृत कुगति निपात ।
परितोलंकृतममल दशन दल तव्यासार,
रसनाकस्रकर्णिका कलिवं विनिहत मार ॥१०॥

निखिल जगत्रय विस्तृत विमलतर गुणागार,
गंधान्वित मति विशद महनि निशि चाभयकार।
कुमत कुवचनानलवनिता–विष्कृत दुर्ज्जेय।
करण विलास हि माहंतव्य-मखिल मुनिगेय ॥ ११ ॥
यत्रोद्भूत तिरस्कृत मधुरामृतरस धर्म,
सदुपदेश मकरंद निपीय दलित दुरधर्म।
समजंगमिषत भव्य मधुव्रत ततयो वन्द्य,
भगवद-गद्य-मचलपद परमानन्द–मनिन्द्य ॥ १२ ॥

(कलश)

कल सकल लोकालोक लोकन विमलकेवललोचन,
आनंदघन पद कंद जलदोयमहितवन विरोचनः
पद्माभ इत्थं मुदा वाचक पुण्यशीलगणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥१३॥

७–श्री सुपार्श्व जिनेन्द्र स्तवः।

(शंकर वसै कैलाश मैं, अनयारीत्या गीयते)

निवस सदा मदुरोंबुजे, पुरुषोत्तम सुपार्श्व हे ! ॥
कुमति लतोच्छेदन विधा-वति निशित सुपार्श्व हे ! ॥ निव० ॥१॥
सुचिदानंदघनात्मता, कर्णय मम महाराज हे !।
बोभूयेत यतः स्फुटं, सुषमाकर जिनराज हे ! ॥ निवस० ॥२॥
सुपरिवृतात्म चन्दन दुरन्त, दुरित भुजगविनाथ हे !।
निरुपम विश्वैश्वर्य कमल-योज्ज्वलया सनाथ हे ! निव० ॥३॥
संकट विकट दव ज्वल, ज्वलन जलधराकार हे !।

विगताकारतया सदा, भूषित भुवनाधार हे ! ।। नि० ।। ४ ।।
पृथ्वी विशिष्ट प्रतिष्ठ सद्, वसुधापति तनुजात हे ! ।
स्वस्तिक लांछनित क्रम, कनकाभज-गति तात हे ।।नि०५।।
यै दृष्टं तव दर्शनं, विशद सुदर्शन दाय हे ।
तै-र्जननं सफलीकृतं, चरणक जागत पाय हे ।। नि० ।।६।।
वृष्टोद्यामृत-जलधर-स्तव दर्शनत उदार हे ! ।
अद्य विवुध तरु-रुद्गतो, मदजिरके सुखकार हे ।। नि०७ ।।

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
सन्दानन्दघन द्रुमौघ जलदोऽयं श्रीसुपार्श्वेश्वरः ।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्या मुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ।।८।।

८—श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र स्तवः ।

(आसणरा रे योगी । अनयारीत्या सोरठ रागेण गीयते)

सत्स्याद्वाद विहित निज-विजयो,
गुणवसति लक्ष्मणा तनयो रे । निशमय तसुभव्याः ।
चंचदमल निज सिंहल नाभो,
ज्झिव कुंद धवल कमल रे ।। निशमय तसु-भव्याः ।। १ ।।
श्रीमहसेन कुल विलसदुदयो-
र्वीधर लब्ध सदुदयो रे ।। निशमय तसुभव्याः ।
वाचंयम तारागण भर्त्ता,

जनचित्त चमत्कृति कर्त्ता रे ॥ निशमय तसुभव्याः ॥ २ ॥

केवल चन्द्रिकया प्रतिहतया,

साद्य पर्यवसानतान्वितया रे । निशमय तसुभव्याः ।

प्रकटीकृत सम लोकालोकोऽ—

विकलंको विनिहत शोको रे । निशमय तसुभव्याः ॥ ३ ॥

बोधित भव्य कुमुद बहु कक्षो,

विमली कृत तदुभय पक्षो रे । निशमय तसुभव्याः ।

विदलित वितत कुमतिमत तिमिरो,

स्खलितामल तेजो निकरो रे । निशमय तसुभव्याः ॥ ४ ॥

निर्ज्जित सकल तरणिगण चन्द्रो,

विभु चन्द्रप्रभ जिनचन्द्रो रे । निशमय तसुभव्याः ।

सांप्रत मुदितो नत विबुधेन्द्रो,

विधु लक्षण एष वितन्द्रो रे । निशमय तसुभव्याः ॥ ५ ॥

चिरमानादि कालतः प्रसृतया,

मिथ्यात्व तिमिरतया मितयौ रे । निशमय तसुभव्याः ।

अनुपागत शिवनगर सरणयो,

घातप तमागत घृणयो रे ॥ निशमय तसुभव्याः ॥ ६ ॥

भवभय कारण कानन पतिता,

विषयक विषतरु तल शयिता रे । निशमय तसुभव्याः ।

त्यक्त्वा मोह-मयीघन निद्रां,

प्रोत्तिष्ठध्वम सुभ मुद्रां रे । निशमय तसुभव्याः ॥ ७ ॥

अविचलपदमधि गंतुं स्वच्छा,
भवतां वरीवर्त्ति यदीच्छा रे। निशमय तसुभव्याः।
तर्हि पुरा जिनचन्द्रं समया,
व्रज तैनं-श्रित बहु विनया रे। निशमय तसुभव्याः ॥८॥
अविचल केवल चन्द्रातपतो,
गति संभ्रमणं विक्षिपतो रे। निशमय तसुभव्याः।
विमलानन्त प्रकाश सुशक्तेः,
कृत संवरणं गुणपंक्ते रे। निशमय तसुभव्याः ॥ ९ ॥
गत्वा तत्र जनित भवयोगं,
संहत कर्मक्षय रोगं रे। निशमय तसुभव्याः।
अस्य मुखद्वारा निसृतायाः,
पानाद्वचनामृत ताया रे ॥ निशमय तसुभव्याः ॥ १० ॥
प्रकटित केवल चन्द्रातपतो,
द्युति तेन पथात्म सुहिततो रे। निशमय तसुभव्याः।
ससुखं व्रजततगं शिवनगरं,
घन सुचिदानन्दं विदरं रे ॥ निशमय तसुभव्याः ॥ ११ ॥

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमल केवल लोचन,
आनन्दघन पद कंदजलदोयमहित वनविरोचनः।
चन्द्राभ इत्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥१२॥

९—श्री सुविधि जिनेन्द्र स्तवः ।

(जिनमन्दिर जयकार ऐसे खेलीये होरी अनयारीत्या काफी वसन्त रागेण गीयते)

जिनवर जगदाधार तारय मां त्वरितं,
सकल जन्तु हितकार तारय मां त्वरितं ।
तारक सुविरुदधार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ १ ॥
पतितं व्यसन निधौ भवजलधौ,
दीनतरं विजितार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ २ ॥
अभिभय भीतं शरणमुपगतं,
शरणागत सुखकार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ३ ॥
तारित दुरित तरंगा-कुलभव,
जलधि पतित जनवार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ४ ॥
आत्मविपिन तत दुरित दवानल,
जलधर धारासार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ५ ॥
अगणित जनतोद्धारण कारण,
करुणा पारावार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ६ ॥
सकल पुरंदर गीतयशोभर,
मुक्तिरमोदर हार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ७ ॥
भूत मकरध्वज रूप विनिर्जित,
मकरध्वज भटसार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ८ ॥
धवल कमल दल विमल करण रुचि-
धर संगत भवपार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ९ ॥

सुविधि समाधिधनाधिपरामां-
गज कलिकुज गजसार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥१०॥
श्रीसुग्रीव विशद कुलसागर,
निरुपम चन्द्राकार तारय मां त्वरितं । जिनवर० ॥ ११ ॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मंदानंदघन द्रुमौघ जलदोऽयं श्रीसुविर्ध्याह्वयः ।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनां ।१२।

१०—श्री शीतल जिनेन्द्र स्तवः ।

(माई रंग भर खेलेगें धमाल अनयारीत्या वसन्त रागेण गीयते)

तीर्थाधिपते शीतलजिनेन्द्र निशमय गुणनम्री कृत सुरेन्द्र । ती० १
दृढरथ नरपति कुलगगनहंस रुचिराखिल सुरपतिततिवतंस । ती०
निबरामभिनंदित निखिल लोकजन नन्दानन्दनविगतशोक । ती०
श्रीवत्सांकितपद गुणनिधान जिततनुरुचिगैरिकगिरिवितान । ती
सदधौ जगदाकृतिरचलकंद ऋषिरज्जु प्रमिता यस्य चन्द । ती०५
उपरि तनलोकाकृति रमलनालमृषि रज्जु प्रमिता यस्य माल । ती०
यस्याधिकरणमगणित धुनीत वलयानिच निखिलभुवनजनीन । ती
अतिधवला मुक्तिशिला विकार यस्याद्भुतकुसुमं सितमुदार । ती०
पुनरति विमलानिदलानि यत्र परितोहरितोष्ट शरणगतत्र ती० । ९
गंधःसुरभीकृत जगदनन्तगुणनिकरो यत्र कृत कुचिदन्त । ती० १०

यत्राव्याबाधित परमसौख्य मक्षय मकरंदः श्रवण मुख्य ती० ११
यदनन्तैःपरिपेपीय्यमान-मुरु सिद्ध मधुकरै र्विजितमान ती० १२
अधुना दधते रण रणक भाव, मलिरात्मा मम कृत कुमति लाव ती०
तस्यामृत सित जलरुह आनंद मकरंद रसं रसितुं सभंद। ती० १४
तदमृत कज सुख मकरंदसार रसमापाययमदलिंककार। ती० १५

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमलकेवललोचन,
आनंदघन पद कंद जलदोयमहितवन विरोचनः।
शीतलक इत्थं मुदा वाचक पुण्यशीलगणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥१३॥

११—श्री श्रेयांस जिनेन्द्र स्तवः।

(सब जीउ जिन बोलौर। तुम प्राण प्रिया मत डोलौ। मपसा दिल खोलौ, दिल खोलौ। अनयारीत्या काफी रागेण गीयते)

त्वं जिन जयकर्त्ता जयकर्त्ता, अयिजिन पापपटल मल हर्त्ता।
विमल सुयशधर्त्ता यशधर्त्ता, अयि जिन पाप पटलमलहर्त्ता॥
यस्तव चरण कमल बलिहारी, सभवेत् कुगतितते रधिकारी। त्वं० १
यस्त्वक देकवचो हुतकारी, स पुन र्भयदापार संसारी। त्वं० ॥२॥
यस्ते चरण जलज बलिकर्त्ता, सभवेत् केवल कमला भर्त्ता। त्वं० ३
यस्तव शासनरंजितचेताः, सहि भुवनत्रय जनता नेता। त्वं० ४॥
त्वं मम नाशय र्समंगुलमालां, अयि बहु कुगति युवति गलमालां।
अयि मयि वितनु सुमंगलमालां, किल घन परमानंद धु शालाम् ६
अयि त्वं शान्तिसुधारसधायी, अयि निरुपम वांछित वरदायी। त्वं

अयि त्वं विष्णु नृपति कुलदीपः, अयि त्वं भवजलनिधि सद्द्वीपः।
अयि त्वं विष्णु मातृतनुजातः, अयिषड्भ्यंकित कृतमदघातः। त्वं
अयि त्वं चंद्राविशद गुणधारी, अयि कल्याणकांत तनु भारी। त्वं०
अयि श्रेयांस तपो धनराजः, अयि त्वं मोहकमल गजराजः। त्वं०१

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मंदानंदवन द्रुमौघ जलदः श्रेयांसनामाजिनः।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनां।१२।

१२—श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र स्तवः।

(हेली दे हेलो। ऐतो जावे छे नेमिकुमार हेली दे हेलो। अन-यारीत्या गिरनारी सोरठ रागेण गीयते)

मदुपरि कुरु करुणां, अहो! अगणित करुणाधार। आं।
दीनदयालो वांछित वितरण, वर निरुपम मन्दार।
हत ममतोद्धृत तरगरल शमता-मृत रस पारावार। मदु० १
श्रीवसुपूज्यामल कुल सुतिलक, वासुपूज्य जिनराज।
उदय दरुण किरणारुण करण, सकलभुवन महाराज। मदु०२
अखिल सुवासवपूज्य कृत रिपु, विजय जया तनुजात।
महिषोपाश्रित चरण दुरित फल, परसमय द्रुमवात। मदु०३
कुगति चतुः शाला कुले भव, सद्मनि शुभगाकार।
सुविशाले व्यसनामृत चित्रे, परिमित महिमाधार॥ मदु०।४।
त्वदधिप परम प्रीतये तव, पुर उत्कलिकिनानाथ।

अतिपटुना शैलालिना मृणु, कुमति वनितया सहाथ । मदु० ६

कर्मनटाधिपतेः सदारे, प्रेरण तोहतमाज ।

विरचयता विविधं किल नाट्यं, निर्जित कुनय समाज ।। मदु०

विधृतानि मयानंतशो, बहु चतुरशीति लक्षाणि ।

वेषान्तरवृन्दानि चेतो, विस्मय कृति दक्षाणि ।। मदु० ।।७।।

चिरमानादि मकालतोद्या-वधिनिशय हे महेश ।।

मामकनटनं लोकितं भू-योशेषं विमते श ।। मदु० ।। ८ ।।

अधुना श्रान्तो नाटकं सं-विदधानो धृतिवाम ।

वदतो विज्ञपयामि भगवन्-नवधारय तदकाम ।। मदु० ।।९।।

जिनपति तुल्यो जगत्त्रयेन्यो-दानी कोऽपि न चात्र ।

त्वां समया समुपागतोऽहं, श्रुत्वेति यशोकात्र ।। मदु० ।।१०।।

तदवलोकय यदि रंजितो मे, वितरतरां दीनाय ।

जिनभुवनत्रय वंद्यतां त्वां, गणधर वन्द्य विमाय ।।मदु०।।११।।

क्वाप्यनन्त गुणरत्न जलनिधे-रेक सुगुणदानेत्र ।

गुणरत्न क्षितिस्तेऽत्र भवतो, न भवेत् त्रिभुवन नेत्र ।। मदु० १२

त्वरितं नोचेन्निगदतरामि-त्यधुना हे निरवद्य ।।

मम पुर ईदृक् पुनरपि मानय, नट जन नट नमवद्य ।। मदु० १३

यदि जनतेतर सदमिपताला-भा हि नास्तितोच्येत ।

परमौदार्य गुणो मम विदितो, जगति तदा मुच्येत ।। मदु० ।।१४।।

इति न विचार्यमिते हि क्षितिता-मेक गुणेक विदार ।

यदनंत सुगुणधारिणस्ते, क्वापि न हानि-रुदार ।। मदु० ।।१५।।

उचितं यद्भवतस्तदेवोरी, कुरु सुतरां विचार्य ।

मदभिलषित निष्पत्ति-रुमयतः, प्रमनिष्यति चर्य्यार्य । मदु० १६
(कलशः)
कल सकल लोकालोक लोकन विमल केवल लोचन,
आनन्दघन पद कंदजलदोऽयमहित वनविरोचनः ।
वासुपूज्य इत्थं मुदा वाचक पुण्यशील भणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥१७॥

१३—श्री विमल जिनेन्द्र स्तवः ।

(परी परी माई हम जोगिनी खेलै होरीरी । हमनै किया है भगवा केसरिया, वाघंवरकी चुनरी । मृगछाला मोरी अंगीयां विराजै गल सर्पन की दुलरी ॥ परी २० ॥१॥ अनया-रीत्यानेकरागमिश्रित काफी रागेण गीयते)

अरे अरे मयिरमस्त्रोपवनस्मे पररे रे ॥ आं० ।
सह कल केवल कमला ललनया, विमल विमल जिनवर रे ।
विमल यशोधवलीकृत जगती, पटल कनक रुचिधर रे । अरे० १
तव दर्शन सुवसंतागमने—नयनानन्दथुभर रे ।
प्रजनित परमानन्द विकसिता-म्र सुखतरौ रतिकर रे । अरे० २
चेतन हंस विराजित मानस, मानस सरसीश्वर रे ।
पुनरगणित विकसित विमलाशय, कमले पद शूकर रे । अरे० ३
सुमति कोकिलारव भर रुचिरे, मुक्ति वर्णिनी वर रे ।
अमितामल गुणगण रत्नाकर, रोहिंण वसुधा धर रे । अरे० ॥४॥
विहित क्षायिक भावारगजोत्तम, लेपन गतदर रे ।
कृतवर्म क्षितिपति कुल केतन, श्यामांगज शिवकर रे । अरे० ५

विजितामृत सुविमल समतारस, सलिल भारया कदर रे।
वर दर्शन कर धृत करुणापिच-रकनिःसृतयोत्तर रे। अरे० ॥६॥
विविधतरं चेतन सदनेरं, चिरमुपचितमघ शर रे।
उड्डायय मम कर्म गुलालं, सकलं सदनुत्तर रे। अरे० ॥ ७ ॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मन्दानन्दघन द्रुमौघ जलदोऽयं कार्त्तनर्मिः प्रभुः।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्या मुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ॥८॥

१४—श्री अनन्त जिनेन्द्र स्तवः।

(भैरवौ-वंसी तेरी वैरिणी बाजै, हांहां रे बइया बाजै। अहो
जसोदाजी के लाल-वंसी०। पुंहतमि वेल चंबेलीयां सींचती
मनभाय। वंसी०। चुनती में हरी हरी कलीयां, गुंथती
गलहार॥ वंसी तेरी वैरिणी०॥ अनयागत्यानेक-
राग मिश्रित काफी रागेण गीयते)

वांणी तेरी दुरित विदारिणी, अहो त्रिभुवन महाराज। वांणी०
भवसिंधु निपतित तारिणी, विनिपातित कमलाज ॥वांणी ०१
विलसत् कुमत कमला करो-त्कट करटि समाज। वांणी०।
यदुदार मधुरिम रंजित, दशनयन समाज ॥ वांणी० ॥ २ ॥
सदनंत गुणगणधारिणी, श्री अनंत जिनराज। वांणी०।
शिवघाति कुमति निवारिणी, नुतनत सुरराज ॥ वांणी० ॥३॥
संदेह तिमिर संहारिणी, सनुदमृत सुखाज। वांणी०।

सिंहसेन कुल सलिलाशय, जलरुह सुयशाज ॥ वांणी० ॥४॥
भवतापित सुधा सारिणी, कृत सकल शुभाय ॥ वांणी० ॥
श्येनांक चरण विराजित, कांचन समकाय ॥ वांणी० ॥५॥

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमल केवल लोचन,
आनंदघन पद कंद जलदोयमहितवन विरोचनः ।
श्री अनंत इत्थं मुदा वाचक पुण्यशीलगणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥६॥

१५–श्री धर्म जिनेन्द्र स्तवः ।

(वेलाउल रागेण गीयते)

वन्दे धर्मजिनाधिपं, कांचन सम वरणम् ।
भानु नृपान्वय सुरमणिं, विबुधांचित चरणम् ॥ वन्दे० ॥१॥
व्रति जिनचन्द्रं सुव्रता–तनयं भगवन्तम् ।
अपुनर्भवसुख संपदा–करमातिशयवन्तम् ॥ वन्दे० ॥ २ ॥
रूप तिरस्कृत विष्टपं, त्रय सम लावण्यम् ।
धृत वज्रध्वजस्तूप विधा–यि जनाग्रेगण्यम् ॥ वन्दे० ॥३॥
त्रिभुवन जन मस्तकधृतो–त्तम शासनमालम् ।
कलिकाल कलंक पंकना-शनं जलधर शालम् ॥ वन्दे० ॥४॥
अपनीयानादिममलं, द्रुतमखिलमधर्मम् ।
भविकमनो जलयोनिषु, विनिवेशित धर्मम् ॥ वन्दे ॥ ५ ॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,

मन्दानंदघन द्रुमौघ जलदोऽयं सौव्रतेयो जिनः ।
इत्थं वाचक पुण्यशीलगणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ।६।

१६-श्री शान्ति जिनेन्द्र स्तवः ।

(कनडा रागेण गीयते । धीर समीरे यमुना तीरे, वसति वने वनमाली । अनयागत्यागाने)

शान्ति जिनेश चरण कज शरणं, तव सुखकरण मुदारम् ।आँ०
विश्वसेन कुल कमल दिवाकर, मृगलक्षण हितकारम् ।
करण कांति जित गैरिक गिरिवर, सकल मंगलाधारम् । शांति०
गतपारा सुख जलनिधि निपतित, तरणि समानाकारम् ।
अनुभव रसवर पद्माभरणं भयहरणं गुणधारम् ॥ शांति० ॥२॥
अपुनर्भव सुरसद्मानन्दा, नन्दथु ललनागारम् ।
अपरीभूत सुरासुर नरपति, यति तति गीताचारम् ॥ शांति० ३
धवलित जगती मंडल कीर्त्तिं वि-ताना हरण मपारम् ।
विगलित सकलजंतु वांछित हित, समगलमालादारम् । शांति०
अचिरांबात्मज कृत भूमण्डल, शांति विधेनन्तसारम् ।
अद्भुत निरुपम शांति सुधारस, नदवर सुगति द्वारम् । शांति०

(कलशः)

कल सकल लोकालोकलोकन विमल केवल लोचन,
आनन्दघन पद कंद जलदोऽयमहित वन विरोचनः ।
श्री शांतिरित्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोद्युतः ॥८॥

१७–श्री कुन्थु जिनेन्द्र स्तवः ।

(गोल पञ्जारी कामिनी, तोनै रासैली विलवाय ललना
अनयाचीत्या संयमथी सुख पामियै । अनयागत्या
च सारंग सोरठ राग स्वरानुसारेण गीयते)

कुंथु सुरोत्तम सत्तम, श्रीसुत दित गतिजाल । जिनेश्वर ।
शूर नरेश्वर कुलकज, नंदन चंदन भाल ॥ जिनेश्वर । कु० ॥ १॥
स्वर्ण सुवर्ण तनुद्युते, छागांकित विविपाद । जिनेश्वर ।
अति सुदृढी कृत निजमता–नुपमोत्सर्गापवाद । जि० । कु० २
स्पर्श सुयोगमितं यथा, गिरिसारं परित्यज्य । जिनेश्वर ।
निजभावं समियादलं, चामी करतामिज्य । जि० । कु० ॥ ३ ॥
यस्तावक चरणांबुज, स्पर्श सुयोग मनीश । जिनेश्वर ।
भविक लोहधातुस्तथा, समुपगतो जगदीश । जि० ॥ कु० ॥४॥
प्रविहाय सबहिश त्मता, यस्त्वं निविड मनीह । जिनेश्वर० ।
सं बायात् परमात्मता, कांचनता जगतीह । जि० ॥ कु० ॥५॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मन्दानन्दघन द्रुमोघ जलदोऽयं कुन्थु तीर्थेश्वरः ।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ६

१८—श्री अर जिनेन्द्र स्तवः ।

(मेरा दिललाग्या जिणेसरसे । अनयागत्या कल्याण रागेण गीयते)

अल्पगत मम मनोरपतौ । आं० ।

रण रणकतां दधदनिशं निरौ-पम्यं धरति तथा ॥ अल्प० ॥
राज-मराल मनोविधु विमले, मानस सरसि यथा ॥ अल्प० ॥१॥
उषसि यथा सम मधुकर मानस—मति विकसित कमले । अल्प० ।
महति यथाखिल मीन मनोनिश-ममिमततर सलिले ॥ अल्प० २
लसति यथातिघने गजचेतो, गिरिवर विन्ध्यवने ॥ अल्प० ॥
यथा जननगत घनजनहृदयं, मानस हरण घने ॥ अल्प० ॥३॥
धृत शुभ दर्शन भूप सुदर्शन, कुल जलनिधि सुमणौ ॥अल्प०॥
जातरूप तनु रूप रुचाव—पुनर्भव पुरसरणौ ॥ अल्प० ॥४॥
संशय तिमिर विदारिणीदेवी, सदुदर कल्पफले । अल्प० ।
नन्द्यावर्त्त लांछनश्रित चरण—तिरस्कृत कर्मखले । अल्प० ।५।

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमलकेवललोचन,
आनंदघन पद कंद जलदोयमहितवन विरोचनः ।
अरनाथ इत्थं मुदा वाचक पुण्यशीलगणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्द महोयुतः ॥१६॥

१९—श्री मल्लि जिनेन्द्र स्तवः ।

(पंचवरणी अंगीरची कुसुमनी जाति । अनयारीत्या काफी रागेण गीयते)

मुक्ति नलिनी विकसन खर किरणं । आं० ॥

मल्लि जिनेशितुरशरण शरणं, चरणकजं मे भवतु शरणम् । मु०
जनन जरा मरणासाधारण, कारण दुरित करण हरणम् ॥ मु०॥१
कुंभ नृपति तनयस्य च कलशां-कित चरणस्य कुशलकरणम् । मु०
अशुभाऽध्यवसायोद्भव भवभय-भीत जंतु विहित सरणम् मु० २
नील कमल दल विमल रुचिरतर, करणरुचेः करणाधरणम् ।
प्रभावती तनुलब्ध जन्मन-श्चिर संचितजडतावारणम् । मु०॥३॥
स्वसमीपागत पूर्वजनन सवयो, रस नृपति कृतोद्धरणम् । मु०
चारु महोदय विबुधालय स-मुख्य सौख्य कमलाभरणम् । मु०४
प्रतिगत पारावार दुराधि, व्याधि भयद जलनिधि तरणं । मु०
वासव वृन्दा वाच्य गुणगणं, सकल भक्तजन गुण भरणम् । मु०।५।

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो,
मन्दानन्दघन द्रुमौघ जलदोऽयं मल्लिनाथो विभूः ।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ।६

२०—श्रीमुनिसुव्रत-जिनेन्द्र स्तवः ।

(सदा शिव ऐसे ज्वालाकु जनमें , शिव शंकर खेलेगें होली शंकर खेलै , सदा शिव खेलै । खेलेगें गणपति गौरी सदा० । अनयागत्या काफी रागेण गीयते)

सदा सविजयतां हत वैरी जय, [illegible] मुनिसुव्रत जिन स्वामी । आं
शंभुर्विजयतां विभुः प्रविजयतां, प्रविजयतां हितकामी । स० ।
विजितामित्र सुमित्र तनूजः, शरणागत विश्रामी ॥ सदा० ॥ १॥
त्रिभुवन जनता मौलिषु विमलं, दीन दयारसगामी । सदा० ।
योऽस्थापयदतुलं निजशासन-महित विधौ चाकामी ॥ सदा० २
परमानंद सुकन्दघनाघन, वृन्द परम पदरामी । सदा० ।
भूपित भृगुकच्छाह्वय तीर्थो-नंतवर गुणग्रामी ॥ सदा० ॥३॥
पद्मांगोद्भव जननः प्रियाप्रिय, गुणपरिणमन विरामी । सदा०।
कूर्मध्वज संराजित चलनो-ऽपरिमित गुरुता यामी ॥ सदा०।४॥
काल तमाल सुकज्जल विलसद्, भूघन कांतिरनामी ॥ सदा०॥
पदकजलीन नयन मधुकर हरि, विसर मौलि गणनामी स०। ५

(कलशः)

कल सकल लोकालोकलोकन विमल केवल लोचन,
आनन्दघन पद कंद जलदोऽयमहित घन विरोचनः ।
श्री सुव्रत इत्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥ ६ ॥

२१—श्री नमि जिनेन्द्र स्तवः ।

(जमुना के तीरे तीरे बाजे तेरा बिछुआ, यमुना०। यमुना के तीरे तीरे धेनु चरावे, बंसरी की टेर सुणाय मेरे मितुया। यमुना के० अन्यथा केरवागत्या काफी रागेण गीयते ।)

तुभ्यं नाथ नमो मितमतये, नमो नमो भयहर नमि जिनपतये ।
उपगत विजय नृपकुल मौलये, धृत मङ्गल कृत्यमिरतये ॥ तु०॥ १
नीलकजांचित पद जलजनये, वप्रोदर कंदर मृगपतये ॥ तु०॥
ज्वलन ज्वालोज्वलित सुवर्ण सुवर्ण सुवर्ण सुकरण द्युतये । तु०
सत्स्याद्वाद विनिहत कुमतये, प्रविजित मंदर गिरिवर धृतये ।तु०
अपकृत रतिजन विहितोद्धृतये, भक्तिरक्तकृत दुष्कृत हृतये । तु०
चरण नम्र गणधर विबुधेश्वर, रुचिर विसर विरचित संनुतये । तु०
निखिल विश्वमंडल संस्थापित, विमलधर्म शुभ निगम स्थितये ।
जनक जनन्योश्चरणाब्जेषु वि-नमित सुरासुरपति संहतये ॥ तु०
कृत सुकृतार्जित तीर्थंकरतो-पगत भुवन जन विहितोन्नतये । तु०५

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधो विज्ञान सल्लोचनो,
मंदानंदघन द्रुमौघ जलदोऽयं श्रीनमीशो जिनः ।
इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनां ।६।

२२—श्री अरिष्टनेमि-जिनेन्द्र स्तवः ।

(घोर घटा करि आयौ री जलधर, घोर घटा करी आयौ ।
अनयागत्या गुंड मल्हार रागेण गीयते)

नेमि जिनवर जलधर आसारी । आं० ।
समुद्रविजय घन समयागमना-द्वैरताप परिहारि ।
रुचिर शिवांबोदर गगनांगण, समित जनन उपकारी रे । नेमि० १
असित करणरुचि सजल घनाघन, घोर घटाद्यनुकारी ।
निर्जर दुंदुभि निनद विनिर्ज्जित, घन घन गर्जित हारीरे । नेमि० २
समवसरण वप्रत्रय वासव, धनुरमलच्छविभारी ।
शिवसुख फल संयम तरु कारण, बोधिबीज जिनकारी रे । नेमि० ३
निजवचनामृत बिंदु वितरणा--मोदित लसदनगारी ।
जिन प्रवचन सलिलपिपासित, गणधर चातक पारी रे । नेमि० ४
मुख चन्द्रामृतरसपानाहृत, क्षणभंगुरतया पारी ।
जितरवि मंडल वसु भामंडल, तडिता सुषमा धारी रे । नेमि० ५
उपदेशामृतरस जलधारा, वर्षण सुमनोहारी ।
भव्यजनात्मधरासु च सकला-शुभ दुर्भिक्ष विदारी रे । नेमि० । ६ ।
परगुण गुरु गिरिनार सुगिरिवर, शिखरोपरि संचारी रे ।
अधुनागत आनंदित सममर, सुरनर भुजगाहारी रे । नेमि० ७।
षड्भिः संबन्धः ।
प्रतिरस्कृत भुवनत्रयधामा, जलजवकाभावारी ।
यदुकुल जलनिधि जगदानंदथु, सलिल वृद्धिविस्तारी रे । नेमि० । ८

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमल केवल लोचन,
आनंदघन पद कंद जलदोयमहितवन विरोचनः ।
श्री नेमिरित्थं मुदा वाचक पुण्यशीलगणि स्तुतः,

संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोसुतः ॥ ६ ॥

२३—श्री पार्श्व जिनेन्द्र स्तवः ।

(जैन धर्म नहीं कीना हो नर देही पाई । यद्वा—मन मोहन रींझवार, हां रे तेरे नयन सलूणे । मन मोहन०। अनयागत्या काफी रागेण गीयते ।)

अहो रे अश्वसेन नरेश्वर नरतनयो वरदायी । आं ।
वज्र कठिन शठता मठ कमठा, सुरमद दलन विधायी । अहो०
प्रज्वलितांग सरीसृप भुजगा—धीश्वर परपदरायी ॥ अहो० ॥१॥
कोमल सुसलिल जलधर माला, त्रिमल दीप्ति भरधायी ॥ अहो०॥
दामोदर मकराकर शशधर, उरगांचित पद पायी ॥ अहो० ॥२॥
प्रकटित लोकालोक सकलवसु, विशद चिदानन्दायी ॥ अहो० ॥
निखिल सुरासुर नरवर विसरा-धीश्वरता पदतायी ॥ अहो० ॥३॥
त्रिभुवन भवनाव्यय विमलप्रभ, मंदिर मणिरत्न पायी ॥ अहो०॥
भक्ति रक्त जनता हित वितरण,दनुजारि मणिरमायी । अहो०॥४॥
त्रिभुवन विस्तृत कीर्त्तिरमानन, भाल तिलकता यायी ॥ अहो०॥
लोकाकार सुमंदिर शिखरे, कनक कलश संस्थायी ॥ अहो० ॥५॥

(कलशः)

लोकालोक विलोकनैक सुविधो विज्ञान सल्लोचनो,
मन्दानंदघन द्रुमौघ जलदोऽयं पार्श्वनाथः प्रभुः ।
इत्थं वाचक पुण्यशीलगणिना भक्त्यामुदाभिष्टुतो,
भूयाद्भूरि विभूतये च भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ।५।

२४—श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्र-स्तवः ।

(चेतन तुं कया फिरै भूला । हिराडोरा कर्म का झूला । अनया-रेखतागानरीत्या काफी रागेण गीयते ।)

अचलतानन्त्यपरिभाजं, व्यवीचलितकनकगिरिराजम् ।
अतुलितानन्तबलकलितः, प्रथम वयसापि संवलितः । अच० ॥ १ ॥
जनन सवनोत्सव सुसमये, यः सुरानन्द पटलमये ।
सुरेश्वर संशयच्छितये, वर्द्धितोत्साहित निमतये ॥ अच० ॥ २ ॥
चरणमिभ पंथिकव्यजितं, दधत-मुत्तममनुद्रुजितम् ।
नृपति सिद्धार्थ कुल शक्रं, विघ्नरिपु हनन विधि चक्रम् । अच० । ३ ।
चरम तीर्थद्यु-सवितारं, दुष्ट दुरितोद्दलयितारम् ।
दीप्र कांचन रुचकांतं, सकलयोगीश्वरं शान्तम् ॥ अच० ॥ ४ ॥
यदि च वो वीरमैयितुमिच्छा, कर्मगण वीर-वर बर्च्छी ।
तर्हि तं संभजत भव्या, वीर जिनचन्द्रमयि भव्याः ॥ अच० ॥ ५ ॥

(कलशः)

कल सकल लोकालोक लोकन विमल केवल लोचन,
आनन्दघन पद कंदजलदोयमहितवनविरोचनः ।
श्रीवीर इत्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणि स्तुतः,
संभवतु भूरि विभूतये भवतामनन्त महोयुतः ॥ १६ ॥

२५—श्री समस्त जिनेन्द्र स्तवः ।

(इण परि भाव भगति मन आणी, सुध समकित सहिनाणीजी ।
वर्त्तमान चउवीसी जाणी, श्री जिनराज वखाणी जी ॥ १ ॥
अलयागत्या धन्यासिरि रागेण गीयते)

ऋषभ जिनेन्द्रोऽजित–जिननामा–नुपमा परिमितधामा रे ।
संभवमुनिपोभिनन्दन देवो, विविध विबुध कृत सेवो रे । ऋ० ॥ १ ॥
सुमति पतिः पद्मप्रभ स्वामी, केवल कमलारामी रे ।
कुमतिलताछिति पार्श्व सुपार्श्वो, विदलित दुर्गति पार्श्वो रे । ऋ० २ ।
श्रीचन्द्रप्रभ सुविधि-रगर्वो, शुभहृच्छीतल सार्वो रे ।
श्री श्रेयांस उद्धृत कुमतेशो, वासुपूज्य तीर्थेशो रे ॥ ऋ० ॥ ३ ॥
विमलो भूपित भुवनोमानी, श्रीमदनन्तो ज्ञानी रे ।
श्री धर्मो धर्मोदय कर्त्ता, श्री शांतिः शांति धर्त्ता रे ॥ ऋ० ॥ ४ ॥
कुंथुररो मल्लीशो विजयी, श्रीमुनिसुव्रत उदयी रे ।
एकविंशतितमः नमिनाथो, देव देवतासनाथो रे ऋ० ॥ ५ ॥
यदुकुल भर्त्तृ नेमि जिनराजोऽभयदः पार्श्वाधिराजो रे ।
त्रिशलोदर धाराधर नीरो-त्तम तरको महावीरो रे ॥ ऋ० ॥ ६ ॥
सन्तु सदैते जगति जिनेन्द्रा, मंगलदाः प्रणतेन्द्रा रे ।
जन्म जलधि तारकता प्रयुता, दत्त जगत्त्रय विभुता रे ॥ ऋ० ॥ ७ ॥
पाठक रामविजय जिद्गणयो, दर्शित सुगति सरणयो रे ।
करणोन्मत्त मतंगज सृणयो, निखिल विबुध शिरमणयो रे । ऋ० । ८ ।
अभवंस्तच्चरणानुग्रहतो, गुण शुभ गंध जलरुहतो रे ।
पुण्यशील गणिना संद्भिस्तुता, स्तवनैरित्थं प्रणुता रे ॥ ऋ० ॥ ९ ॥

प्रशस्तिः ।

वर्षे नन्दशरद्विपक्षितिमिते (१८५९) मेघागमत्तौ तथा
मासे भाद्रपदे घनाघनपदे पक्षे वलक्षे तिथौ ।
पञ्चम्यां गुरुवासरे पुरवरे श्रीपल्लिका पत्तने,
ह्यानन्दद्रुवनै जिनेन्द्रभवनै र्भूर्युत्सवैर्भूषिते ॥१॥

श्री खरतर गण गगनां—
गण-तरणौ सकलसूरिमौलिमणौ ।
श्रीजिनहर्ष मुनीन्द्रे,
शासति सद्धर्मराज्यरमाम् ॥ २ ॥

गच्छे स्वच्छतरे बृहत्खरतरे क्षेमादिकीर्त्यन्वये,
श्रीमद्वाचक शान्तिहर्ष गणयोऽभूवन् महीमण्डले ।
तच्छिष्या जिनहर्ष नाम गणयो वैरंगिकानुत्तराः,
प्राप्तागाध जिनागमार्णवतटाः संजज्ञिरे सत्तमाः ॥३।

तत्पादाम्बुज—पर्युपास्ति-निपुणा विद्याचणाः सद्गुणाः,
जाताः श्री सुखवर्द्धनाः शमधनाः श्रीवाचकाग्रेसराः ।
तत्पादाम्बुज रेणु रंजित वरेण्यांगा बभूवुः सदा,
दीनोद्धार दयापरा गणि दयासिंहाह्वयाः वाचकाः ॥४॥

तत्पादाब्ज मधुव्रता वर महोपाध्यायतां बिभ्रतो,
लब्धोद्दामकुवादिवृन्दविजयाः संप्राप्तपुण्योदयाः ।
ज्ञाताशेषनयाश्च रामविजयाः षट्शास्त्रसारप्रदाः,
संजाग्रत्प्रतिभोद्भटाः पुनरबोभूयंत भू-विश्रुताः ॥५॥

तेषामाद्य विनेयतां च दधता श्रीसद्गुरूणां, यशो-
आज्ञां वाचक पुण्यशील गणिना ज्ञानां सदानंददा।
नव्यानां परमेष्ठिनां स्तुतिरियं वर्य्या चतुर्विंशते-
र्नाना राग रसान्विता विरचिता सास्तात्सतां श्रेयसे॥६॥

भगवानदास कस्या-
ग्रहेण सच्छ्रेष्ठिनो विनीतस्य।
जिनभक्तिरक्त मनसः,
सदुद्यमोऽयं सफल आसीत्॥ ७॥

वाचनाचार्य श्री पुण्यशीलगणि-विरचितः
चतुर्विंशति-जिनेन्द्र-स्तवः संपूर्णः।

आलेखि मुनि-विनयसागरेण संशोधितश्च—

